प्रातःक्लास 15/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। यह है याद की यात्रा। यात्रा में तो बहुत होते हैं। सिर्फ़ तुम नहीं हो। तुम नज़दीक में हो। जो–जो जहाँ–जहाँ भी हैं बाप को याद करते हैं, तो वह ऑटोमेटिकली नज़दीक आ जाते हैं। जैसे चन्द्रमा के आगे कोई सितारे बहुत नज़दीक होते हैं। कोई बहुत चमकते हैं। कोई नज़दीक, कोई दूर भी होते हैं। देखने में आता है यह स्टार तो बहुत चमकता है। यह बहुत नज़दीक है। यह तो चमकता ही नहीं है। तुम्हारा भी गायन है। तुम हो ज्ञान और योग के सितारे। ज्ञान सूर्य मिला है बच्चों को। बाप बच्चों को ही याद करते हैं। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं तो ज्ञान सूर्य बाप भी उन्हों को ही याद करते हैं। बच्चे भी याद करते हैं। जो बच्चे बाप को याद नहीं करते हैं, उनको बाप की याद भी नहीं पहुँचती है। याद से याद मिलती ज़रूर है। बच्चों को भी याद करना है। बच्चे कहते हैं, बाबा आप हमको याद करते हैं? बाप कहते हैं, क्यों नहीं। इस रीति बाप को याद क्यों नही करते हैं। जो जास्ती पवित्र हैं और बाप से बहुत प्यार है तो कशिश भी ऐसी करते हैं। हरेक अपने से पूछे हम कहाँ तक बाबा को याद करते हैं। एक की याद में रहने से फिर भी पुरानी दुनियाँ जैसे कि भूल जाती है। बाप को ही याद करते–2 जाकर मिलते हैं। अभी मिलने का समय आया हुआ है। ड्रामा का राज़ भी बाप ने समझाया है। बाप आते हैं, आकर के अपना रूहानी बच्चा बनाते हैं। पतित से पावन कैसे बनो(नें) सो सिखलाते हैं। बाप तो एक ही है। उनको ही सभी याद करते हैं ; परंतु याद सभी को नम्बरवार अपने–2 पुरुषार्थ अनुसार मिलते(ी) है। जितना बहुत याद करेंगे वह जैसे कि सामने खड़े हैं। कर्मातीत अवस्था भी ऐसी होनी है। जितना याद करेंगे उतना ही कर्म–इन्द्रियाँ चंचल न होंगी। कर्म–इन्द्रियाँ चंचल बहुत होती हैं। उनको ही माया कहा जाता है। कर्म–इन्द्रिया(ी) से कुछ भी खराब काम न हो। जैसे नागे सन्यासी होते हैं। वह दवाईयों से कर्म इन्द्रियों को नससता(निरस्त) कर देते हैं। यहाँ तो कर्म इन्द्रियों को वस(श) करना होता है। है याद की यात्रा। निससता(निरस्त) आदि करने की बात ही नहीं। बच्चे कहते हैं बाबा, यह क्यों होता है? बाप कहते हैं, तुम जितना याद में रहेंगे उतना ही कर्म–इन्द्रियाँ वस(श) में हो जावेंगी। इसको ही कहा जाता है कर्मातीत अवस्था। यह सिर्फ़ याद की यात्रा से ही होती है; इसलिए भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है। सो तो भगवान ही सिखलावेंगे। भगवान सिखलाते हैं अपने बच्चों को। यह तो जानते हो सबसे कड़ी कर्म इन्द्रियाँ हैं विकार की। उसपर योगबल से जीत पाने का पुरुषार्थ करना है। अभी वस(श) नहीं हो जावेंगे(ी) वह तो पिछाड़ी में होंगे(ी)। जब प(ी)रिपक्व अवस्था हो जावेगी। फिर कोई भी कर्म इन्द्रियाँ चु(चं)चलता नहीं करेंगी। अभी चंचलता बंद होने से फिर 21 जन्म लिए कोई भी कर्म इन्द्रियाँ धोखा नहीं देंगी। 21 जन्म लिए कर्म इन्द्रियाँ वश हो जाती हैं। सबसे मुख्य है काम। याद करते–2 कर्म इन्द्रियाँ वश हो जावेंगी। उनसे फिर कोई भी उल्टा कार्य न होगा। अभी कर्म इन्द्रियां(ीं) को वश करने से आधा कल्प के लिए इनाम मिलता है। वश न कर सकते हैं तो फिर पाप रह जाते हैं। तुम्हारे पाप योगबल से कट जावेंगे। तुम पवित्र होते जाते हो। यह है नम्बरवन सब्जेक्ट। बुलाते भी हैं पतित से पावन होने के लिए। तो बाप ही आकर पावन बनाते हैं। बाप ही नॉलेज फुल है। बाप कहते हैं, अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो, यह भी नॉलेज है ना। एक है योग की नॉलेज, दूसरा है 84 के चक्र का नॉलेज। दो नॉलेज हैं। फिर उसमें दैवी गुण ऑटोमेटिकली इमर्ज़ हैं। बच्चे जानते हैं हम मनुष्य से देवता बनते हैं। तो दैवी गुण ज़रूर धारण करनी(ा) है। अपनी चांज रखनी है। नोट करने से अपने ऊपर सावधान रहेंगे। अपनी चांज रखेंगे, फिर कोई भूल न होगी। बाप खुद कहते हैं मामेकं याद करो। तुमने ही मुझे बुलाया है; क्योंकि तुम जानते हो बाबा पतित–पावन है। वह जब आते हैं तब ही डायरैक्शन आदि देते हैं। अभी इन डायरैक्शन पर अमल करना है आत्माओं को। तुम पार्ट बजा(ते) हो इस शरीर द्वारा। तो बाप को भी ज़रूर शरीर में आना पड़े। यह बहुत वण्डरफुल बातें हैं। त्रिमूर्ति का चित्र कितना क्लीयर है। ब्रह्मा तपस्या करके यह बनते हैं। फिर 84 जन्मों बाद यह बनतें हैं। यह भी बुद्धि में याद रहे हम ब्राह्मण सो ही देवता थे। फिर 84 का चक्र

लगाया। अभी फिर देवता बनने आये हैं। देवताओं की डिनायस्टी हो जाती है। तो भक्ति मार्ग में बहुत प्रेम से उनको याद करते हैं। अभी वह बाप तुमको यह पद पाने लिए युक्ति बतलाते हैं। यह है बहुत सहज। याद भी बहुत सहज है। सिर्फ़ सोने का बर्तन चाहिए। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही नये–2 प्वाइन्ट्स इमर्ज़ होंगे। ज्ञान भी अच्छा सुनाते रहेंगे। समझेंगे, जैसे कि बाबा हमारे में प्रवेश कर मुरली चला रहे हैं। बाबा भी बहुत मदद करते हैं। औरों का कल्याण तो करना है ना। वह भी ड्रामा में नूँध है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। टाइम पास होता जाता है। इतने वर्ष, इतने मास, इतने घंटें, इतने सेकण्ड कैसे पास होते हैं। शुरू से लेकर टाइम पास हो जाता है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। यह सेकण्ड फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। यह भी अच्छी रीत समझना है और बाप को याद करना है। जिससे विकर्म विनाश हों। और तो कोई उपाय ही नहीं। इतना समय जो कुछ करते आये वह सभी थें(ी) भक्ति। कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देंगे। क्या फल देंगे, यह किसको भी पता नहीं है। क्या फल देते, कब और कैसे देते हैं यह कुछ भी पता नहीं है। बाप जब आवें फल देने लिए तब लेने वाले–देने वाले इकट्ठे हों। बाप चला गया तो न लेने वाला, न देने वाला रहा। ड्रामा का पार्ट आगे चल जाता है। सारी हयाती(लाइफ) में अभी यह अन्तिम जन्म है। अंतिम लाइफ है। हो सकता है कोई शरीर भी छोड़ दे और कोई पार्ट बजाना है तो जन्म भी ले सकते हैं। किसका बहुत पाप होगा, हिसाब–किताब होगा 10 जन्म भी ले सकते हैं। घड़ी–2 एक जन्म ले फिर दूसरा तीसरा जन्म लेते रहेंगे। गर्भ में गया, दुःख भोगा फिर शरीर छोड़ दूसरा लिया। काशी करवट में भी यह हाल होता है। पाप सिर पर बहुत हैं। योगबल तो है नहीं। काशी करवट खाना यह है अपने शरीर को घात करना। कहते भी हैं, बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर ब(ी)ल चढ़ेंगे; परंतु अर्थ का किसको भी पता नहीं। भक्ति मार्ग में ब(ी)ल चढ़ते हैं वह भी भक्ति हो जाती है। दान–पुण्य, तीर्थ आदि जो कुछ करते हैं वह किससे लेन–देन होती है? पापात्माओं साथ। रावण राज्य है ना। बाप कहते हैं, खबरदारी से करना। कहाँ कोई खराब काम में लगाया तो सिर पर बोझा चढ़ जावेगा। दान–पुण्य भी बड़ा खबरदारी से करना होता है। ग़रीबों को तो अन्न अथवा कपड़े आदि दान दिया जाता है वा आजकल धर्मशाला आदि भी बनवा कर देते हैं। साहूकारों के लिए तो बड़े–2 महल हैं। ग़रीबों के लिए हैं झोपड़ियाँ। वह तो गंदे नालों के आगे रहे पड़े हैं। वह हिरे हुये हैं। उनको थोड़े ही बास आती है। इस कचड़े का फिर खाद बनता है, जो फिर बिकता है। जिसपर फिर खेती आदि होती है। सतयुग में तो ऐसे किचड़े पर खेती आदि होती ही नहीं। वहाँ तो नई मिट्टी होती है। उसका नाम ही है पैराडाइज़। नाम भी गाया हुआ है पुखराज परी, सब्ज़परी..... रत्न है ना। रत्न है आत्मा। कैसे रत्न हैं? कोई कैसे सर्विस करते हैं, कोई कितनी सर्विस करते हैं। कोई कहते हैं, हम सर्विस नहीं कर सकते। बाबा के रत्न तो सभी है ना; परंतु उनमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं, जो फिर पूजे जाते हैं। पूजा होती है देवताओं की। भक्ति मार्ग में अनेकानेक प्रकार के(की) पूजाएं आदि होती हैं। वह भी ड्रामा में सभी नूँध है। जिसको देखकर मज़ा आता है। हम एक्टर्स हैं। इस समय तुमको नॉलेज मिलती है। तुम बहुत खुश होते हो, जानते हो भक्ति का भी पार्ट है। भक्ति में भी बड़ी खुशी होती है। गुरु ने कहा माला फेरो। बस, उस खुशी में फेरते ही रहते हैं। समझ कुछ भी नहीं। शिव तो है निराकार। उनको भला फिर दूध पानी आदि क्यों चढ़ाते हैं। बेसमझी है ना। मूर्तियों को भोग लगाते हैं। वह कोई खाते थोड़े ही हैं। भक्ति का पेशगीर कितना बड़ा है। जैसे झाड़ बड़ा होता है ना। भक्ति भी है झाड़। ज्ञान है बीज। झाड़ कितना बड़ा है वैरायटी मनुष्यों का। अभी तुम्हारी बुद्धि में रचयिता और रचना का सारा नॉलेज है। रचयिता बाप और रचना को दुनियाँ में सिवाय तुम बच्चों के और कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जितना जानते हैं उतना औरों को समझाते रहते हैं। उनको तो सारा दिन बुद्धि में सर्विस ही सर्विस है। और कोई बात नहीं। अभी हड्डियाँ भी इसी सर्विस में स्वाह करने वाले हैं। अभी तुम बच्चों ने रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत

को समझा है। कितना बड़ा बेहद का झाड़ है। तुमको कोई कहते हैं, यह तुम्हारी कल्पना है। अरे, यह तो वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होती है। कल्पना रिपीट थोड़े ही होती है। यह तो नॉलेज है, उनको कल्पना कैसे कहेंगे। कोई पढ़कर क्या–2 बनते हैं उनको कल्पना कैसे कहेंगे। यह नॉलेज है। यह है नई बातें नई दुनियाँ के लिए। भगवानुवाच है ना। भगवान भी नया। वाच्य भी है नई। वह कहते हैं, कृष्ण भगवनुवाच। तुम कहते हो, शिव भगवानुवाचः। हरेक की वाच अपनी–2 है। एक न मिले दूसरे से। यह है पढ़ाई। स्कूल में भी पढ़ाई है ना। कल्पना की तो बात ही नहीं। बाप है ज्ञान सागर, नॉलेजफुल। उनको सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का नॉलेज है। शास्त्रों में लिखा हुआ है, ऋषियों–मुनियों से पूछा तुम रचयिता और रचना को जानते हो? तो कहते थे, हम नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो उन्हों को नॉलेज मिली ही कहाँ से, जबकि आदि सनातन देवी–देवता धर्म ही नहीं जानते। जिन्होंने जाना है उन्होंने ही पद पाया है। फिर जब संगमयुग आवे तब ही बाप आकर नॉलेज पढ़ावे। तो नये–2 इन बातों में मूँझते हैं। कहते हैं, तुम लोग इतने थोड़े राइट हो, बाकी शास्त्र आदि सभी झूठे हैं। बाप कहते हैं, गीता झूठी तो सभी बाल–बच्चे झूठे हो गये। वर्सा किससे मिलेगा। गीता है माई–बाप बाकी सभी है रचना। उनसे वर्सा मिल न सके। वेदों, शास्त्रों आदि में रचयिता और रचना की नॉलेज हो न सके। पहले यह तो बताओ, वेदों ने कौन–सा धर्म की स्थापना किया? धर्म तो हैं ही चार। हरेक धर्म का धर्म शास्त्र एक ही होता है। दस थोड़े ही होते हैं। शास्त्र होता ही है एक। तो यह भी वण्डरफुल बात है। जो एक भी मनुष्य नहीं जानते। बाप ही आकर ब्राह्मण कुल स्थापन करते हैं। ब्राह्मणों को नॉलेज देते हैं। जो फिर सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी कुल में अपना पद पाते हैं। यह किसको भी मालूम नहीं है। शास्त्र तो सभी है रचना। रचयिता तो एक ही है। रचना से वर्सा नहीं मिल सकता। वर्सा मिलता ही है रचयिता से। वह तो बाप है। सर्वशास्त्र मई शिरोमणी गीता गाई हुई है। भगवान किसको कहा जाता है, यह भी कोई नहीं जानते। कह देते हैं सर्वव्यापी है। कृष्ण में भी है, फलाना में भी है। ड्रामा में यह सभी नूँध है। अ(ब)ाप आकर सम्मुख तुमको सिखलाते हैं, इस रथ द्वारा। रथ तो ज़रूर चाहिए ना। आत्मा तो है निराकार। उनको साग(का)र शरीर मिलता है। तो निराकार और साकार दोनों कहा जाता है, जीवात्मा। दो हो जाते हैं। यह भी अर्थ किसकी बुद्धि में नहीं है कि आत्मा क्या चीज़ है। उनको ही नहीं जानते तो बाप को फिर कैसे जानेंगे। बाप बैठ रियलाइज़ कराते हैं। आत्मा और परमात्मा क्या चीज़ हैं। मनुष्य जो सुनते हैं वह बोलते रहते हैं; परंतु है बिल्कुल रॉंग। राइट तो बाप ही सुनते हैं। अभी तुम राइट बनते हो। जिससे फायदा कुछ भी नहीं। माला किसकी सिमरते हैं कुछ भी पता नहीं है, जैसे जट लोग हैं। जो जिसने कुछ–कुछ कहा वह सत्य मानते। पत्थर से बैठ माथा मारते हैं। (एक्ट करना) और ही पतित बनते जाते हैं। तो फिर माला सिमरने से फायदा ही क्या। अर्थ ही नहीं समझते हैं। पत्थर मारते–2 और ही पत्थर बुद्धि बन गये हैं। उनको कहा जाता है तुच्छ बुद्धि। सारी दुनियाँ में देखो क्या लगा पड़ा है। दुःख ही दुःख है। सभी ऑरफन बन पड़े हैं। बाप को ही नहीं जानते। बाप खुद आकर अपना परिचय देते हैं। ज्ञान से सद्गति होती है। बाकी भक्ति से है दुगर्ति। यह भी बाप ही बतलाते हैं। और कोई भक्त ऐसा नहीं कहेंगे कि भक्ति से दुगर्ति होती है। यह तो बाप ही समझाते हैं। ज्ञान ज़िदाबाद, भक्ति मुर्दाबाद होती है। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। भक्ति शुरू होती है रावण राज्य से। भक्ति से सीढ़ी उतरते–2 तमोप्रधान, पत्थर बुद्धि बन पड़ते हैं। किसके ऑक्युपेशन को ही नहीं जानते। भगवान की कितनी पूजा आदि करते हैं। जानते कुछ भी नहीं। तो बाप समझाते हैं, इतना ऊँच पद पाने लिए अपन को आत्मा समझना है और बाप को याद करना है। इसमें है मेहनत। अगर किसकी मोटी बुद्धि है तो मोटी बुद्धि से याद करें; परंतु याद एक को ही करे। गाते भी हैं, बाबा आप आवेंगे तो आप से ही बुद्धि योग जोड़ेंगे। अभी बाप आये हैं। तुम सभी किससे मिलने आये हो? जो प्राण दान देते हैं आत्मा को। अमरलोक में जाते हैं। बाप ने समझाया है काल पर जीत पहनाता हूँ। तुमको अमर

लोक में ले जाता हूँ। दिखाते हैं अमरकथा पार्वती को सुनाई। अभी अमरनाथ तो एक ही है। यहाँ थोड़े ही पहाड़ों पर बैठ कथा सुनावेंगे। सो भी झूठी कथाएं लगा दिया है। बिल्कुल ही 100% झूठ। है कुछ भी नहीं। बर्फ का इतना बड़ा लिंग आपे ही कैसे बन जावेगा। कितनी(ी) झूठ है। उनको भी सत्य कह देते। फिर जाते हैं शिव का दर्शन करने। अभी शिवबाबा नीचे कहाँ से आया। हर बात में अभी वण्डर लगता है। भक्ति मार्ग में जहाँ जाओ सभी वण्डर्स है। तुमने ही 84 जन्म लिये हैं, कितने तीर्थ यात्रा आदि की होगी, धक्के खाये होंगे। धक्के खाते–2 जाकर पट पड़े हो। भक्ति कितना रुचि से करते हैं। जान देते हैं। शास्त्रों को भी बहुत मान देते हैं। बाप कहते हैं, यह सभी है भक्ति। अ(इ)नसे कोई की भी सद्गति नहीं हो सकती है। दुगर्ति दुगर्ति है। सद्गति सद्गति है। ज्ञान का फल होता है सतयुग, त्रेता में। भक्ति का फल भी आधा कल्प। तुमको अभी स्वर्ग़ का अथवा विश्व का मालिक बनाते हैं। यह तुम जानते हो ना। यह तो जानते हो हम विश्व के मालिक थे। यह ल.ना. विश्व के मालिक थे ना। फिर कहाँ गये। एक को भी पता नहीं है। तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। यह घराना था। आदि सनातन देवी–देवता घराना था। अभी भक्ति पूरी होती है। रावण राज्य जब पूरा होता है तब ही मैं आता हूँ, राम राज्य स्थापन करने। रावण राज्य, राम राज्य भी तुम समझते हो। और कोई नहीं। कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जान सकते हैं। कितनी अंधश्रद्धा है। भारत कितना ऊँचा था। अभी भारत की(का) क्या हाल हो गई(या) है। कितना उधार लेते रहते हैं। आमदनी तो कुछ है नहीं। खर्चा ही है तो लोन लेना पड़ता है। भारत कितना साहूकार था। कुबेर के ख़ज़ाने थे। अभी भीख़ मांग रहे हैं। पाई–2 के लिए हैरान हैं। कहां भारत सोने की चिड़िया थी। कहां अभी भीख मांग रही है। इनसॉलवेन्ट है ना। भारत कितना सॉलवेंट था। अभी इनसॉलवेन्ट है। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। तुम फिर से विश्व के मालिक बन रहे हो। ज्ञान से तुम आधा कल्प सुखी होते हो। फिर भक्ति से आधा कल्प दुःख होता है। करके सुख भी है तो अल्पकाल के लिए। काग विष्टा समान सुख है। बाप बच्चों को ही बैठ समझाते हैं। भगवानुवाच है ना, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। गीता में अक्षर भल पढ़ते हैं; परंतु अर्थ नहीं समझते हैं। पढ़ाने वाले भी कुछ नहीं समझते हैं। भगवान सर्वव्यापी कहना कितना गपोड़ा है। कितनी गालियाँ आदि देते हैं। भगवान उल्हाना देते हैं, मैं आता ही तब हूँ जब तुम हमारी ग्लानी करते हो। रावण के मत पर ,गुरओं के मत पर तुम क्या–2 करते हो। मुझे कण–2 में ठोंक देते हो। यह तो बेहद की गालियाँ हो गईं। कहते हैं ना जास्ती गालियाँ देंगे तो मौत के सिवाय और कुछ नहीं देखेंगे। बाप भी कहते हैं बस, इससे जास्ती गालियाँ मत दो। फिर भी तुम सुधरते नहीं हो, तो विनाश को पावेंगे। तुम बहुत ग्लानी करते हो। मैं तुमको सद्गति देता हूँ। तुम फिर मेरी इतनी ग्लानी करते हो। 24 अवतार कच्छ–मच्छ अवतार, अच्छा वह भी छूटा, माफ है। फिर कहते हो, ठिक्कर–भित्तर में है। अभी तो यह सहारन(सहन) नहीं होता है। टूमच में गया। कितना अपकार करते हो। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप फिर सभी पर आकर उपकार करते हैं। निष्काम सेवा इसको कहा जाता है। बच्चों को राज्य देकर खुद वानप्रस्थ में चले जाते हैं। मैं स्वर्ग़ का राज्य नहीं करता हूँ। मैं स्वर्ग़ का राज्य करूँ तो फिर नर्क का भी मुझे करना पड़े। ख़्याल करो। बेहद का नाटक यह कितना मज़े का है। यह तुम्हारे सिवाय और कोई समझा न सके। तुम सुनाते हो तो सुनकर वायरे हो जाते हैं। कल्प पहले वाले ही समझते हैं। तुमको कहते हैं, तुम कोई शास्त्र आदि पढ़े नहीं हो। बोलो, हमने तो पूरा आधा कल(प) शास्त्र आदि पढ़ी हैं। भक्ति की है। इतनी भक्ति तो तुमने भी नहीं की है। हमको तो एक्युरेट मालूम है, इतने जन्म हमने भक्ति की है। तुमने थोड़े ही देखा है। तुमको कहते हैं शास्त्रवाद करो, तो तुम मुँह ढीला कर देते हो। तो वह बोलने लग पड़ते हैं। तुम बोलो, वह है भक्ति। यह है ज्ञान। भक्ति से दुगर्ति। ज्ञान से सद्गति होती है। बड़ा युक्ति से समझाना है। अच्छा तुम बच्चों को योग भी सिखाया, ज्ञान भी सिखाया। ज्ञान और योग। योग से तुम पावन बनते हो। पीस, प्रॉस्पर्टी मिल जाती है। आयु भी बड़ी हो जाती है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

रात्रिक्लास 15/6/68 ओमशान्ति सृष्टि चक्र याद है?

शिवबाबा शिवबाबा तो सभी कहते हैं। यहाँ बाप बैठे हैं। समझते हैं हमको शिवबाबा पढ़ा रहे हैं। पढ़ाई में, याद की यात्रा भी आ जाती है; इसलिए सेकेण्ड में जीवनमुक्ति गाया हुआ है। जीवनमुक्ति तो मिलनी ही है। पुरुषार्थ कर ऊँच पद पाना है। बच्चे यह तो जानते हैं हम अपनी बादशाही तन–मन–धन से स्थापन कर रहे हैं। तन भी जरूर चाहिए। आत्मा में मन, बुद्धि है ही और धन। धन इतना काम नहीं देगा हाँ चित्र आदि बनाते हैं। शिवबाबा तो दाता है। वह क्या करेंगे? कर्तव्य कराते हैं ऐसे2 सेन्टर खोलो। खूब पुरुषार्थ करना है। इतना पुरुषार्थ और कोई मुनष्य नहीं करता। तुम जितना करते हो। जानते हो हम आदि सनातन दैवी–देवता धर्म की सैपलिंग लगा रहे हैं। देवता धर्म कोई है नहीं। सिर्फ चित्र है। शास्त्र है; परन्तु उनको पता नहीं है गीता आदि सनातन दैवी–देवता धर्म का शास्त्र है। तुच्छ बुद्धि हो गये हैं; इसलिए भारत के लिए कहा जाता है पत्थर बुद्धि और पारस बुद्धि। तो बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा आये हुए हैं जो बैठ हमको पढ़ाते हैं। तो कितना ऐसे टीचर को याद करना चाहिए। जो अच्छा इम्तहान आदि पास करते हैं तो टीचर को सौगात आदि देते हैं। वह है लौकिक यह है पारलौकिक। तो टीचर को तो बहुत याद करना चाहिए। बहुत ही अन्दर में खुशी होनी चाहिए। बाप हमको ऐसा बना रहे हैं। अभी बच्चे जानते हैं। वह गीता पढ़ते हैं; परन्तु दिल से बात लगती नहीं। अभी तुमको दिल से लगती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं यह याद रहे तो भी खुशी का पारा न रहे। जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। ब्रह्मा भी पढ़ रहे हैं। जिसके हम एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स हैं। भगवान पढ़ाते हैं यह याद करो तो यह भी मनमनाभव का काम दे सकते हैं। बाबा पढ़ाते हैं तो याद किया ना। इससे भी विकर्म विनाश होंगे। यह अन्तिम जन्म है बाबा आये हैं साथ में घर ले जावेंगे। और कोई समझा न सकेंगे बाबा अपने परमधाम–शान्तिधाम ले जावेंगे नई बात थोड़े ही है। बाबा पढ़ाते हैं फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने राजधानी में राज्य पा लेंगे। पढ़ाई से ही हम नई दुनिया के मालिक बनते हैं। यह तो जो बाबा समझाते हैं यह भी भूल जाते हैं। यह याद रहे तो भी सतोप्रधान बन जायें। याद से ही सतोप्रधान बनेंगे। यह चिन्तन रहे। बाप कहते हैं भल धंधा आदि भी करो नहीं तो शरीर निर्वाह कैसे चलेगा। समझो बाबा भगवान हमको पढ़ाते हैं तो यह भी याद हुई ना। बाबा 84 का चक्र समझाते हैं। टीचर को भी समझाओ मनुष्य से देवता बनना माना कैरेक्टर्स सुधारना है। बाप आये हैं उनको याद करो। दैवी गुण धारण करो। आजकल सबसे लड़ाई–झगड़ा स्टूडेन्ट्स का है। जिसको ही न्यु वल्ड समझते हैं। एक की भूल सारी दुनिया में। भारत की ही भूल है। अविनाशी खण्ड भी भारत ही है ना। तो भारतवासियों की ही भूल है; परन्तु यह अपन को अकलमन्द समझते हैं। पहले2 बाप का परिचय देने से फिर कुछ पूछेंगे नहीं। हम श्रीमत की बात करते हैं। तुम मनुष्य मत पर बात करते हो। हम मनुष्य मत पर तो जन्म–जन्मान्तर चले हैं। भगवान तो टीचर ठहरा ना। बाप पढ़ाते हैं नई दुनिया के लिए तो विनाश भी जरूर होगा ना। यह है ही तमोप्रधान दुनिया। बहुत प्यार से समझाना है। बाबा ऐसे ही कहते हैं। जो बाप, टीचर, गुरु भी है। महिमा में ही तुम किसको पानी कर देंगे। बाप कहते हैं सतोप्रधान बनना है तो बाप को याद करो। तो आत्मा शान्त रहेगी। बाप नज़र से निहाल करते हैं। अशरीरी भव। आत्माभिमानी बन हमको याद करो। पुरानी सृष्टि का विनाश होना ही है। सारी तैयारी हैं विनाश के लिए। ड्रामा अनुसार तुम्हारी देरी है। जो याद में नहीं रह सकते हो। कर्मातीत अवस्था न हुए हैं। पैगाम सभी को नहीं पहुँचाया है। तुम वर्ल्ड मैसेन्जर हो। गाते हैं ना अहो प्रभु तेरी लीला। बाप आया इतना दिन पढ़ाया।..... फिर देरी हो जाती है। बहुत हंगामा, दरबदर हो पड़ते हैं। बोलो, हम श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। स्वर्ग में अशान्ति होती ही नहीं। श्रीमत है। तुम जो सवाल पूछते हो मनुष्य मत पर। हमको ईश्वरीय (मत) मिलती है। मनुष्यमत का कुछ सुनो ही नहीं। दैवी मत के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। दैवी मत पर तो तुम ....। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।